पद ९३

(राग: परज - ताल: धुमाळी)

जन चला चला गुज पाहण्या हो।।धु.।। पुनरिप जननमरण हे चुकवुनी। स्वरूपीं निज सुख घेण्या हो।।१।। श्रीगुरुनीं त्या जनक शुका जे। लेवविलें प्रिय लेण्या हो।।२।। ज्ञानरूप मार्तांड प्रभू। श्रीमाणिक आपणचि होण्या हो।।३।।